जब हमारे चारों तरफ नकारात्मक वातावरण हो। उस समय जब बोलने की बारी आती है, तब हम कई बार सोचते हैं कि ज़्या बोलें, हमें अपनी बात रखने में भय लगता है। कई बार सोचते हैं कि कहीं कुछ गलत अर्थ न निकल जाय। ऐसे दबाव में इस महापुरूष में वो कौन सी ताकत थी कि कभी किसी ने अनुभव नहीं किया। भीतर की ज्वाला, भीतर की उमंग, भीतर का आत्मविश्वास इस धरती की ताकत को भली भांति जानने वाला इंसान विश्व को सामर्थ्य देने, सही दिशा देने, समस्याओं के समाधान का रास्ता दिखाने का सफल प्रयास करता है। विश्व को पता तक नहीं था लेडीज एडं जेन्टलमैन के सिवाय भी कुछ और सज़्बोधन हो सकता है। जिस समय ब्रदर एडं सिस्टर ऑफ अमरीका यह दो शज़्द निकले पूरे सभागार में तालियां गूंज उठी। उस दो शज़्द में उसने भारत की ताकत का परिचय करा दिया था। वह 11 सितज़्बर का दिन था। जिस व्यज़्ति ने मां भारती की पदयात्रा करने के बाद मां भारती को अपने में संजोया था। उत्तर से दक्षिण पूर्व और पश्चिम तक की हर भाषा को हर बोली को आत्मसात किया था। भारत मां को जिसने अपने भीतर पाया था। ऐसा महापुरूष पल दो पल में पूरे विश्व को अपना बना लेता है। पूरे विश्व को अपने अंदर समाहित कर लेता है। हजारों साल की विकसित हुई भिन्न-भिन्न मानव संस्कृति को वह अपने में समेट करके विश्व को अपनत्व की पहचान देकर विश्व को जीत लेता है। हमारे लिए 11 सितज़्बर विश्व विजयी दिवस था। उस विश्व विजयी दिवस से 21वीं सदी का प्रारंभ हुआ। मानव के विनाश का मार्ग, संहार का मार्ग वाले अमरीका की धरती पर प्रेम और अपनत्व का संदेश दिया जाता है। उसी अमरीका की धरती पर उस संदेश को भुला देने का परिणाम था कि मानव के संहार के रास्ते का विकृत रूप विश्व को हिला दिया था। तब भारत से निकली हुई आवाज को इतिहास में जगह मिल पायी। इसी से विवेकानंद जी को अलग रूप से समझने की आवश्यकता मुझे लगती है। विवेकानंद जी को आप बारीकी से देखेंगे तो पाएंगे कि वह जहां गए वहां भारत को बेहतर तरीके से प्रस्तुत किया। भारत की महान परज़्पराओं, महान चिंतन को रखते हुए वह कभी थकते नहीं थे। विश्व में जहां गए, जहां भी बात करने का मौका मिला वहां बड़े विश्वास के साथ, बड़े गौरव के साथ भारत का महिमामंडन, भारत की महान परंपराओं के